3 सुनहरे बाल

ज्ञान गंगा, दिल्ली

एक बार एक गाँव में गरीब महिला रहती थी, जिसका एक छोटा सा बच्चा था। गाँव में रहनेवाले लोग उसे 'भाग्यशाली बच्चा' कहते थे। वे लोग कहा करते थे कि वह लड़का राजा की बेटी से विवाह करेगा। यह अफवाह राजा के कानों तक भी गई। राजा ने अपने धन में से लड़के की

माँ को सोने के कुछ टुकड़े दिए और बच्चे को अपने साथ रख लिया। उसने बच्चे को एक बक्से में डाला और नदी में बहा दिया। बक्सा एक निःसंतान चक्कीवाले दंपती को मिला। उन्होंने बच्चे को अपना लिया और उसे एक शक्तिशाली युवा के रूप में बड़ा किया। एक बार राजा चक्की मालिक के यहाँ शरण लेने के लिए आया तो उनके लड़के की असलियत के बारे में पता किया।

अब राजा ने चक्की वाले, दंपती को कुछ सोना दिया और उस नौजवान को अपने साथ ले गया। उसने उसे रानी के पास एक पत्र के साथ भेज दिया, जिसमें यह कहा गया था कि एक नौजवान लड़का इस पत्र को लेकर आएगा। जैसे ही वहाँ आता है, उसे मारकर गाड़ दो। महल के रास्ते में एक जंगल था। जंगल में उस

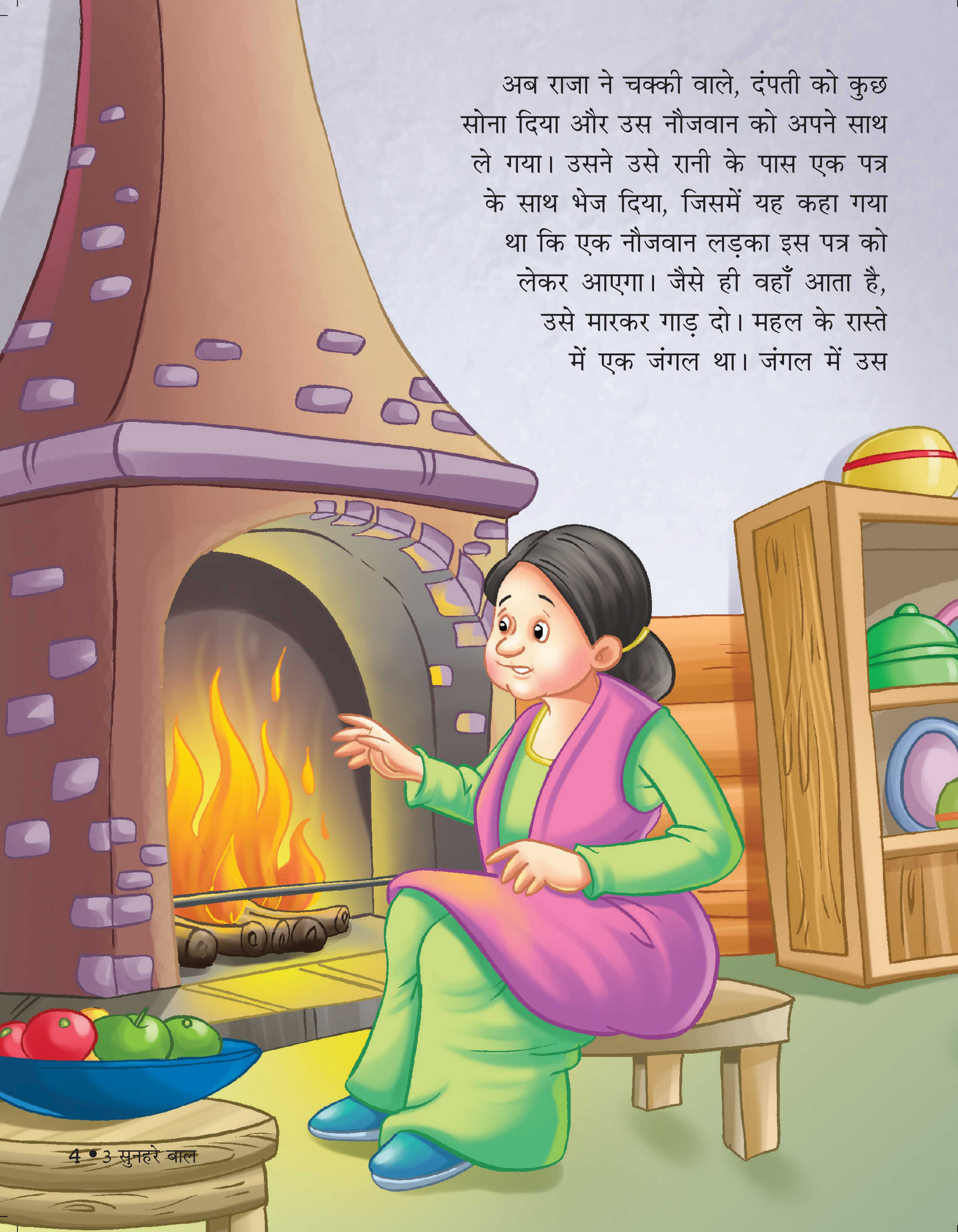

नौजवान ने एक मकान देखा और उसका दरवाजा खटखटाया। घर में आग के पास बैठी एक बूढ़ी औरत ने उसे अंदर बुला लिया। यह घर डकैतों का था। डकैत जब वापस आए तो उन्होंने उस नौजवान को देखा। उनके सरदार ने बूढ़ी औरत से उसके बारे में पूछा।

बूढ़ी औरत ने उन्हें सबकुछ बता दिया, जो नौजवान ने उसे बताया था। सरदार ने वह पत्र पढ़ा और उसे फाड़ दिया। उसने एक दूसरा पत्र लिखा, जिसमें लिखा था कि नौजवान जैसे ही महल में पहुँचे, उसकी शादी राजा की बेटी से कर दी जाए। अगली सुबह चोरों ने नौजवान को महल का रास्ता बताया। नौजवान महल

में पहुँचा और रानी को पत्र सौंप दिया। रानी को यह पढ़कर आश्चर्य हुआ। लेकिन राजा की आज्ञानुसार शानदार विवाह समारोह में नौजवान का विवाह राजा की बेटी से हो गया और नव दंपती ने अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत कर दी।

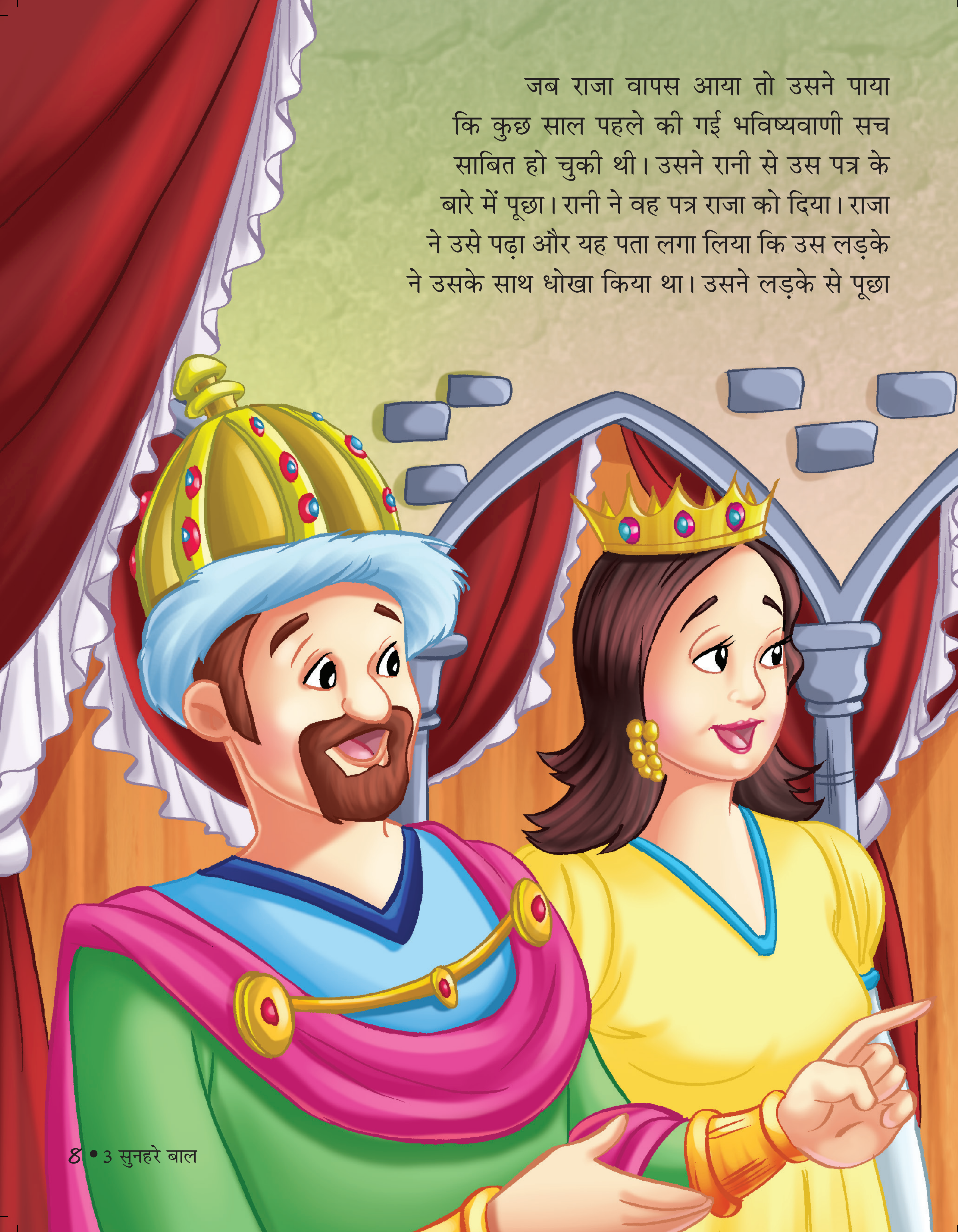

जब राजा वापस आया तो उसने पाया कि कुछ साल पहले की गई भविष्यवाणी सच साबित हो चुकी थी। उसने रानी से उस पत्र के बारे में पूछा। रानी ने वह पत्र राजा को दिया। राजा ने उसे पढ़ा और यह पता लगा लिया कि उस लड़के ने उसके साथ धोखा किया था। उसने लड़के से पूछा

कि वह नकली पत्र क्यों लेकर आया? नौजवान ने कहा कि वह इसके बारे में कुछ नहीं जानता और राजा को उस रात के बारे में बताया, जो उसने जंगल में गुजारी थी। राजा ने अब उसे काली पहाड़ी पर एक नरभक्षी राजा के पास उसके तीन सुनहरे बाल लाने के लिए भेज दिया। भाग्यशाली लड़का सुनहरे बाल लेने के लिए रवाना हो गया।

उस नौजवान को दो–दीवार वाले शहर के पास से गुजरना पड़ा। शहर के हर द्वारपाल ने उसे अंदर आने से पहले एक सवाल पूछा। पहले द्वारपाल ने पूछा, ''बाजार में ऐसे फव्वारे क्यों हैं, जहाँ कभी ताजा पानी बहता था, अब सूखा पड़ा है ?'' दूसरे ने पूछा, ''उस पेड़ में जहाँ पहले सुनहरे सेब लगते थे, लेकिन अब मुश्किल से एक पत्ती

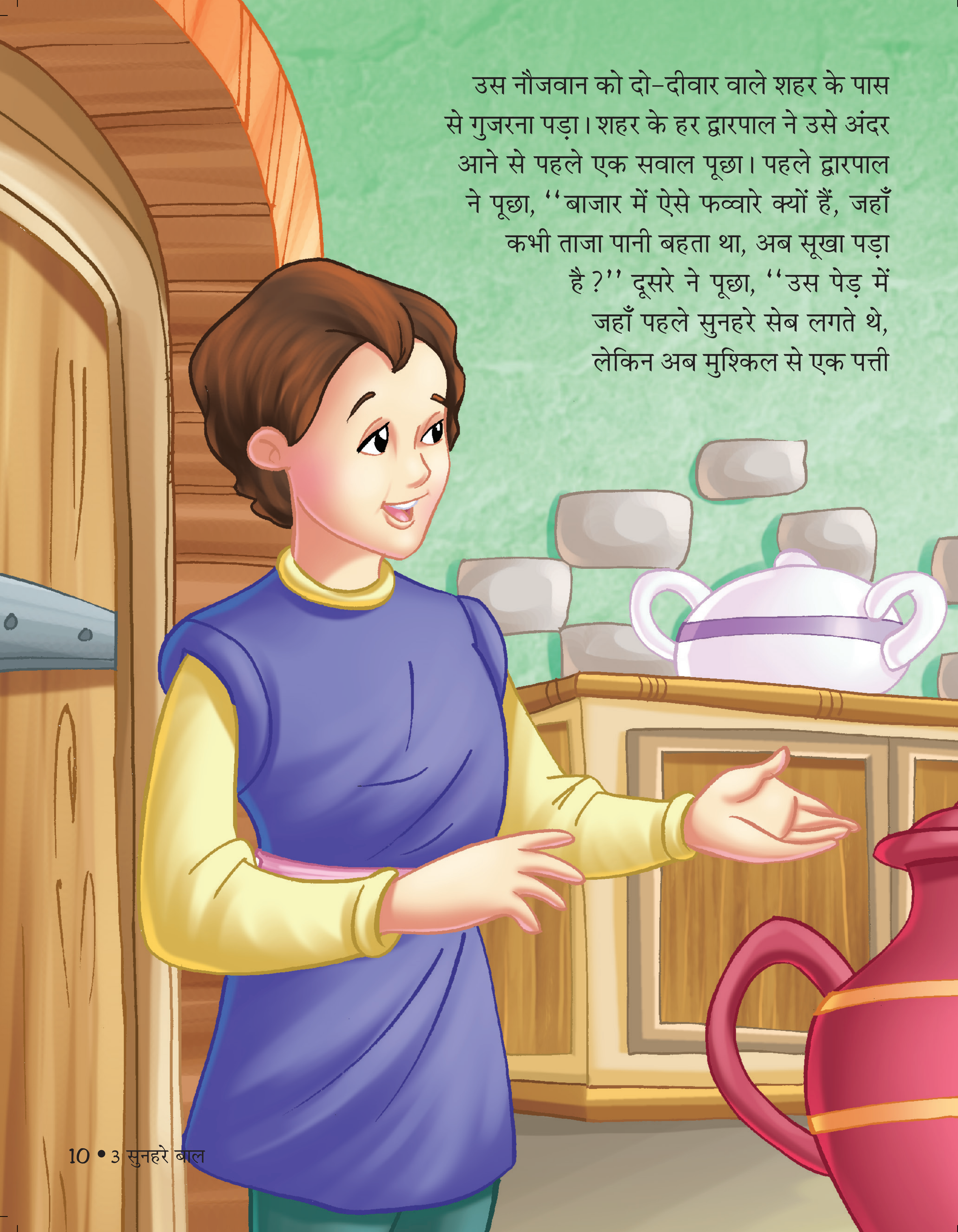

ही क्यों लगती है?'' रास्ते में एक लंबी नदी मिली। माझी ने लड़के से पूछा, ''मुझे हमेशा पीछे और आगे की ओर नौकायन क्यों करना पड़ता है और मैं कभी भी मुक्त क्यों नहीं रहता?'' नौजवान ने उन्हें उनके सवालों के जवाब ढूँढ़कर लाने का वादा किया। वह काले पहाड़ों पर पहुँच गया और वहाँ उसे दुष्ट राजा की दादी मिली। उसने दादी को अपनी मंशा के बारे में।

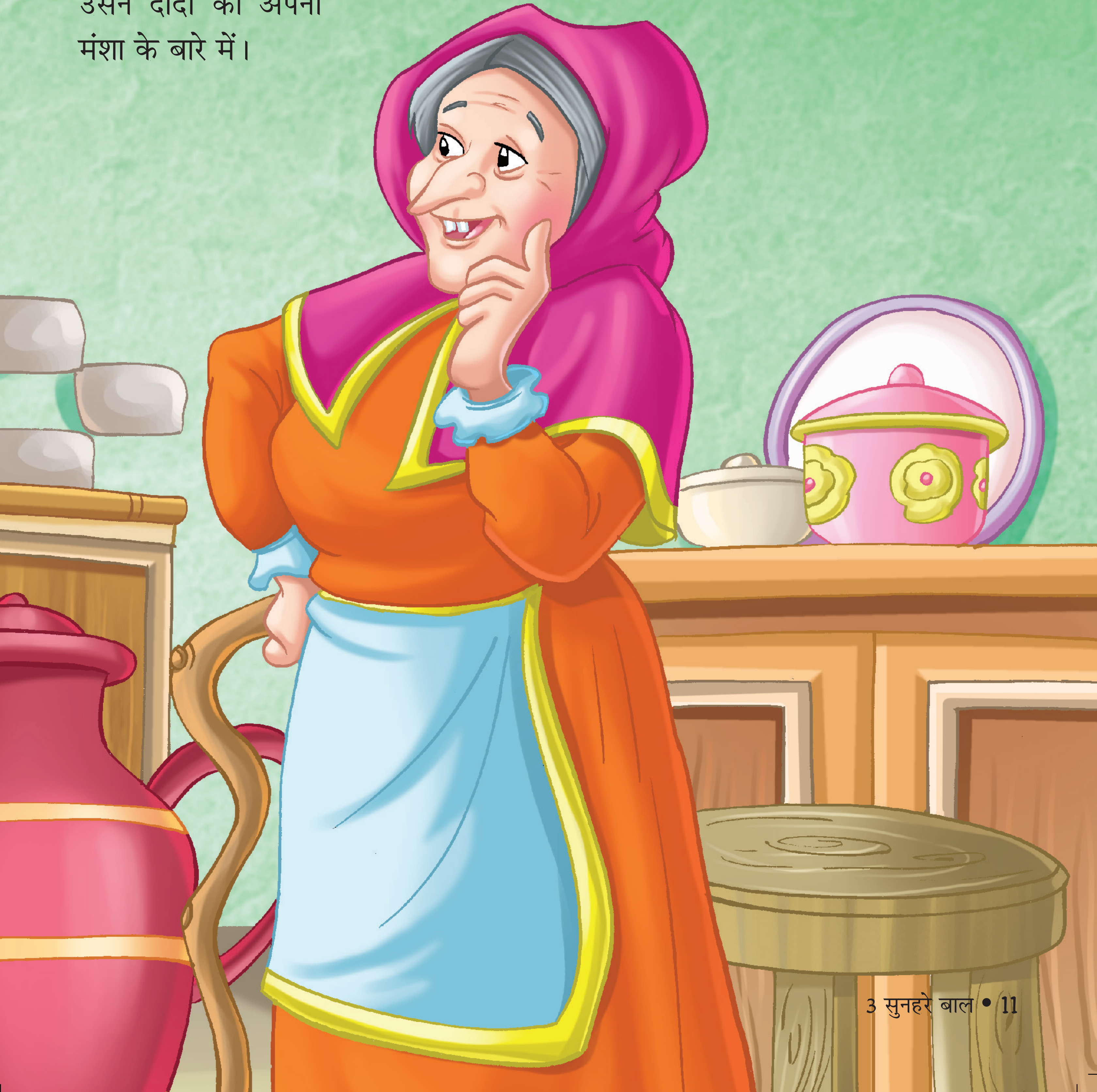

दादी माँ को उस पर दया आ गई। उन्होंने उसे चींटी बना दिया। जब दुष्ट राजा वहाँ आया तो उसे इनसानी मांस की गंध आई। उसने घर का कोना–कोना खोजा,

लेकिन उसे कुछ नहीं मिला। जब वह सो गया तो दादी ने उसकी दाढ़ी से तीन सुनहरे बाल तोड़ लिये और राजा को जगाकर उससे तीनों सवालों के जवाब भी पूछ लिये। पहले सवाल का जवाब देते हुए उसने कहा, ''उस कुएँ के तले में मेढक बैठा हुआ है, जो फव्वारे को पानी पहुँचाता है। यदि उस मेढक को मार दें तो पानी जल्द ही आने लगेगा।'' दूसरे सवाल के जवाब में उसने कहा, ''उसकी जड़ों में एक चूहा रहता है। यदि उस चूहे को मार दें तो उन्हें दोबारा से सुनहरे सेब मिलने लगेंगे।''

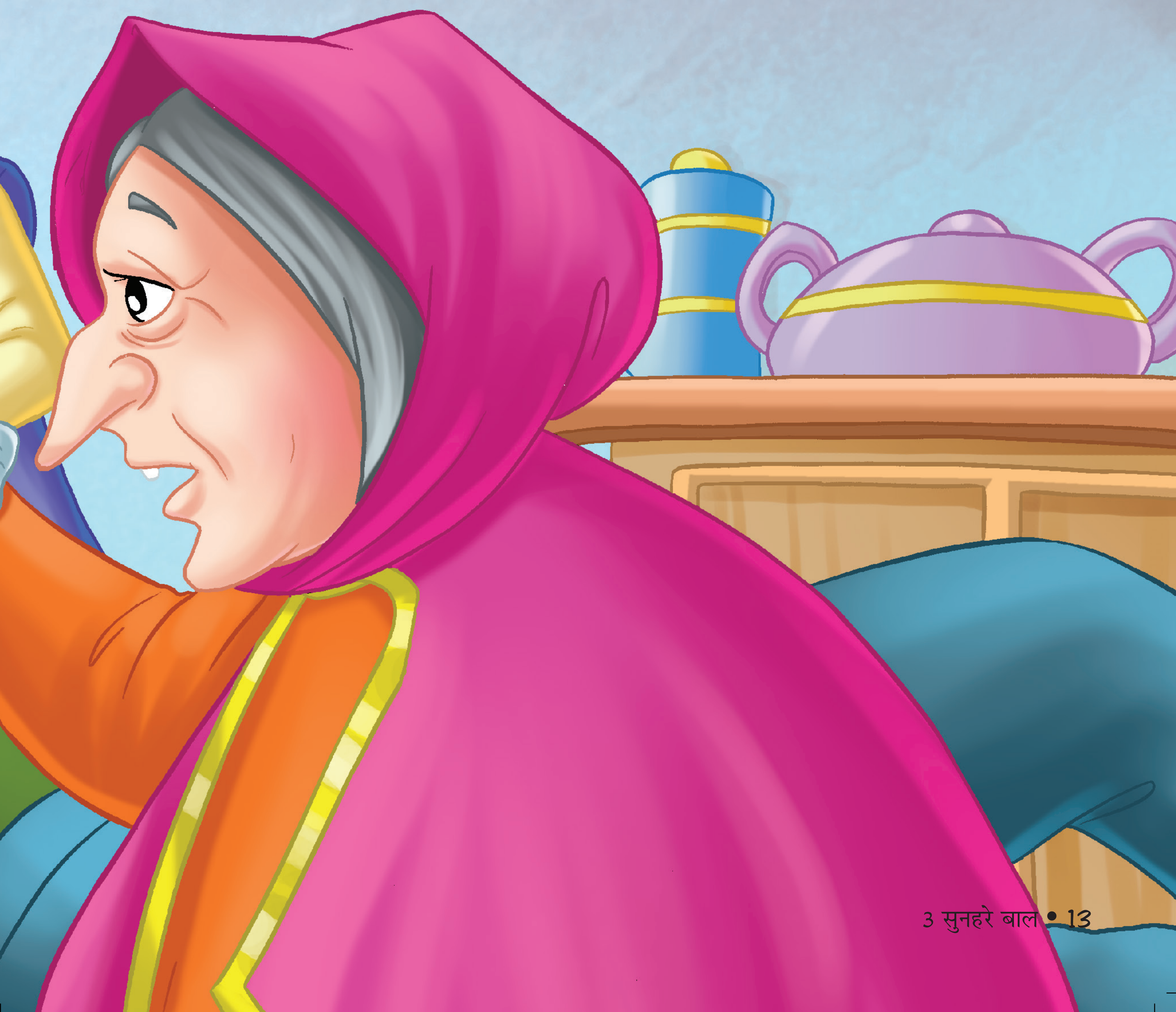

तीसरे सवाल का जवाब था, ''नाविक को अपनी पतवार उस व्यक्ति को देनी चाहिए, जो उसे दूसरी तरफ चलाना चाहता है और वह अन्य व्यक्ति होगा, जिसे नाव पर ध्यान देना होगा। इस प्रकार बूढ़ा नाविक नदी के किनारे चला जाएगा और पक्षी की तरह मुक्त हो जाएगा।'' दुष्ट राजा दोबारा से सोने चला गया। अगली सुबह भाग्यशाली लड़के ने बूढ़ी दादी का शुक्रिया अदा किया और वापस अपने महल की ओर निकल पड़ा। उसने तीन सवाल के

जवाब उन लोगों को बता दिए, जिन्होंने उससे वे सवाल पूछे थे। उन्होंने उसे दो गधों के साथ काफी सोना दिया। फिर वह राजा के पास पहुँचा और उसे तीन सुनहरे बाल सौंप दिए। इसके पश्चात् सभी खुशी-खुशी अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

सीख : चुनौतियों को स्वीकार करें

माइक एक बुद्धिमान लड़का था, लेकिन उसके शर्मीले स्वभाव के कारण उसकी बुद्धिमानी से सभी प्राय: बेखबर रह जाते। वह अपने इस स्वभाव से छुटकारा पाना चाहता था। एक दिन उसने अपनी अध्यापिका से अपनी परेशानी बताई, जिसने उसे कक्षा का निरीक्षक बनाने का प्रस्ताव दिया। अध्यापिका ने उसे बताया कि इस प्रस्ताव को स्वीकार करने से उसे अपने शर्मीले स्वभाव को दूर करने में मदद मिलेगी। माइक ने प्रस्ताव स्वीकार किया। इस नई जिम्मेदारी ने उसे स्कूल के बहुत से अध्यापकों और बच्चों से बातचीत करने का मौका दिया। उसका आत्मविश्वास बढ़ गया इस प्रकार वह बहुत ही निडर और साहसी लड़का बन गया।